।। काल सर्प योग ।।

कालसर्प योग ऐक विवादास्पद विषय हो गया हैं । इसका कारण हैं, कुछ लोग इसे मानते हैं और कुछ लोग इसे नही मानते हैं । न मानने वालों का तर्क हैं कि शास्त्रों में इसका उल्लेख नही हैं और कुछ समय पहले ही इसकी चर्चा आरंभ हुई हैं । इसके विपरित इसे मानने वालों का कहना हैं कि जो चीज शास्त्रों में नही वो आगे कभी नही होगी और उस पर चर्चा अथवा खोज ना हो ऐसा भी कंहि उल्लेख नही हैं । अर्थात मानने वालों का कहना हैं ये नयी चीज हैं अथवा नयी खोज हैं । चर्चा चाहे तो कर लें । बहरहाल इसे समझने के लिये हमे इसकी गहराई में चलना होगा । अथवा समझना होगा कि कालसर्प योग क्या हैं ?

इसके मानने वालों का कहना हैं कि मूल रूप से कालसर्प योग राहु और केतु से बनता हैं । अर्थात जब राहु और केतु के ऐक तरफ सारे ग्रह संचार कर रहे हो तो ये योग बनता हैं । कई लोग ऐक अथवा दो ग्रहों के राहु-केतु के बीच से बाहर होने पर भी अर्ध कालसर्प योग मानते हैं और कुछ तो मात्र ऐक अथवा दो ग्रहों के राहु- केतु के बीच में रहने से भी आंशिक कालसर्प योग मान लेते हैं । इसलिये अब इस योग के होने पर ही सवाल उठने लगे हैं ।

हालाकि अर्ध काल सर्प योग और आंशिक काल सर्प योग-- इस योग के विवादों में से पुच्छ की तरह उपविवादास्वरुप निकल आयें हैं । एसा लगता हैं, कि समय के साथ ये उपविवाद अपनी पहचान खो देगें । इसलिये कि कोई भी योग याँ तो होता हैं, अथवा नही होता हैं । अर्ध और आंशिक का कोई अर्थ नही हैं । किसी भी ज्योतिष शास्त्र में अथवा ज्योतिष की मूलभूत सैध्दांतिक पुस्तक में किसी भी योग को अर्ध अथवा आंशिक नही बताया गया हैं । कंहि किसी योग के उल्लेख के दौरान अगर एसा कहा भी गया हैं तो इसका अर्थ ये हैं, कि वैसा योग फल नही करता हैं । आप सोचकर देखें कि 'गजकेसरी योग' अथवा 'पंच महापुरुष' के किसी योग की अर्ध अथवा आंशिक योग के रुप में हम कैसी परिभाषा करेगें ? मूल सिंध्दात ये हैं कि योग याँ तो फलदायी होगा याँ फिर किसी ग्रह के प्रभाव में भंग हो जायेगा । इस तरह योग याँ तो हैं याँ फिर नही हैं । अर्ध और आंशिक की कोई परिभाषा नही हैं ।

दरअसल राहु और केतु दो ऐसे छाया ग्रह हैं जिससे भय उत्पन्न होता हैं । असुर ग्रह राहु-केतु अशुभ फल ही देते हैं । ऐसा संकेत शास्त्रों मे कई स्थानों पर दिया गया हैं । शास्त्रों में इनकी कहानियां भी बहुत रोचक हैं और ज्ञानवर्धक भी, हालाकि इन अलंकारिक कहानियों में सीखने को बहुत कुछ हैं । समुन्द्र मंथन की बहुप्रसिध्द कथा से किसे इन्कार होगा, इसी समुन्द्र मंथन के दौरान राहु-केतु का जन्म हुआ हैं । इससे भी पहले बहुत पहले अथवा ऐसा कहें कि शास्त्रों के मुताबिक कई युग पहले हिरण्याकश्यप नामक ऐक असुर हुआ करता था । हिरण्याकश्यप ऋषि कश्यप का पुत्र था और भक्त प्रहलाद हिरण्याकश्यप का पुत्र था । जिसकी रक्षा के लिये स्वंय नारायण भगवान को नरसिंह अवतार लेना पड़ा ।

इसी हिरण्याकश्यप की एक पुत्री भी थी जिसका नाम था सिहिंका । सिहिंका का विवाह विप्रचिति से हुआ था । असुर होते हुऐ भी विप्रचिति का चित असुरी नही था । इन्ही माता पिता से स्वरभानू नामक संतान हुई थी जिसे हम आज राहु - केतु के नाम से जानते हैं । इसके आगे की कथा कुछ इस प्रकार से हैं, कि सिहिंका और विप्रचिति की संतान स्वरभानू बहुत महात्वाकाक्षी निकला और घोर तपस्या करके भगवान से वरदान लिया, कि वो भी देवताओं की तरह पुजा जाये । विप्रचिति का असुरी चित का ना होना और सिहिंका का असुरी कन्या होना और दोनो के संबंध से उत्पन्न हुआ स्वरभानू दोनो के स्वभाव की मुर्ती था ।

असुरी प्रकृति से हटकर कुछ कर दिखाना उसे अपने पिता विप्रचिति से मिला और कुछ हासिल कर दिखाने की जिद स्वरूप घोर तपस्या करके वरदान हासिल करना उसे अपनी मॉ सिहिंका से मिला । भगवान से देवताओं की तरह पुजे जाने का वरदान उसने अपने हठ और घोर तपस्या से हासिल किया था और आगे चलकर उसे इसका फल भी मिला । चाहे फिर अपनी असुरी प्रकृति के कारण उसे ये दण्ड स्वरूप मिला हो परन्तु ग्रह के रूप में राहु - केतु का पुजा जाना हमारे सामने हैं । उसने अपना निर्माण स्वंय किया था वो स्वनिर्मित था । 'कालसर्प योग' में उत्पन्न लोग भी कठोर परिश्रम के बलबूते स्वनिर्मित होते हैं । जीवन उनके लिये सहज और आसान नही होता । इस तरह हमने ये भी देखा हैं, कि जिनकी कुण्डली में काल सर्प योग होता हैं वे लोग कठोर परिश्रम से अपने जीवन का निर्माण करते हैं और जाने माने लोग बनते हैं । सोनिया गाँधी, दक्षिण का सुपर स्टार रजनीकाँत, काल सर्प योग में उत्पन्न हुऐ हैं । इनके अलावा और भी बहुत से जाने माने लोग काल सर्प योग में उत्पन्न हुऐ हैं और उनका जीवन कठोर परिश्रम का उदाहरण माना जाता हैं ।

भले ही बुध्दीजीवी वर्ग इसमें से मीन मेख निकाले और कहें कि 'शास्त्रों में सभी बातें भारतीय-दर्शन पर आधारित होती हैं और इनमें कोई तर्क नही होता' परन्तु हमारे ऋषिमुनि ऐसे भी तो नही थे कि किसी बात का कोई अर्थ ना निकलता हो और वे बेवजह ही उसपर इतने शास्त्रों का निर्माण कर डाले । आखिर हजारों वर्ष पहले सूर्य, तारें और ग्रहों की खोज करना हमारे ऋषि मुनियों के ही बलबूते की बात रही हैं ।

बहरहाल, समुन्द्र मथंन की बात करते हैं । जब भी शास्त्रों की बात होती हैं तो समुन्द्र मंथन की बात अवश्य ही होती हैं । इसका कारण शायद ये हैं, कि शास्त्रों मे देव-दानवों की समुन्द्र मथंन के समय जो सन्धी हुई ऐसी किसी और समय पर नही हुई हैं । सभी देवताओ और सभी दानवों ने इस समय पर अपना योगदान दिया और श्रीमदभागवत के अनुसार इस मथंन से चौदह रत्न निकले थें । कामध ोनु गाय, उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पद्रुम, रम्भा नामक अप्सरा, वारूणी नामक कन्या, पारिजात वृक्ष, चन्द्रमा, लक्ष्मी, विष, मदिरा, अमृत और शंख इत्यादि चौदह रत्न समुन्द्र मथंन की उपलब्धी माने जाते हैं ।

अमृत हमारे विषय का रत्न हैं । जब अमृत, समुन्द्र मथंन से निकला तो उसे आपस में बाटने का प्रश्न उठा । तो उसे बाटने के लिये भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण किया । मोहिनी कह लिजिये यां महामाया यां फिर मोहमाया, उस पर तो त्रिभुवन भी मोहित थे तो फिर असुरों की क्या बिसात थी । मोहिनी के मोह में बधें असुर अमृतपान के लिये अपनी बारी की प्रतिक्षा करने लगे और मोहिनी ने देवताओं से अमृतपान करवाना आरंभ किया ।

विप्रचिति और सिहिंका का पुत्र स्वरभानू कुछ अलग चित और बुध्दी का था । उसे तुरन्त ही सारी बात समझ आ गई और वो देवताओं का भेष बनाकर अमृतपान की ईच्छा से देवताओं की कतार में सूर्य और चन्द्रमा के बीच जा बैठा । यंहा ये प्रकट होता हैं कि स्वरभानू में धोखा देने की कला थी और वो भेष बदलकर धोखा देने में माहिर था । यंहा कुण्डली में राहु-केतु की इस प्रकृति का भी संकेत मिलता हैं कि वे जैसे दिखते हैं वैसा फल वो देगें या नही ये अच्छी तरह देख लिया जाना चाहिये । अन्यथा धोखा हो जाना बड़ी बात नही हैं और इसिलिये ये छाया ग्रह कुख्यात हैं । जो स्वरभानू भगवान विष्णु को धोखा दे सकता हैं वो किसी ज्योतिषि को धोखा देने में कितना समय लगायेगा ? वैसे भी कुण्डली के मूल सिध्दात ही उनके विषय में ऐसे हैं कि राहु-केतु जिस ग्रह के साथ होगें अथवा जिस ग्रह का प्रभाव उनपर सबसे ज्यादा होगा वैसा ही वे फल देते हैं ।

बहरहाल सुर्य और चन्द्रमा ने स्वरभानू को पहचान लिया और मोहिनी रूप धारण किये विष्णु भगवान को उसके विषय में बता दिया और अमृत पान करते स्वरभानू को अचानक विष्णु भगवान ने सुदर्शन चक्र चलाकर दो टुकड़ो में बांट दिया और स्वरभानू का सर धड़ से अलग हो गया । परन्तु अमृत के मात्र स्पर्श से ही वो अमर हो गया था । इसलिये दो टुकड़ो में बट जाने के बाद भी वो जिवित रहा और दो टुकड़ो में सक्रिय हो गया । कालांतर में ईन्ही दो टुकड़ो में से सर वाले हिस्से का नाम राहु पड़ा और धड़ वाले हिस्से का नाम केतु पड़ गया । इसके आगे फिर ब्रह्माजी ने दोनों को ग्रह बना दिया ।

स्वरभानू को मिले भगवान के वरदान ने चमत्कार दिखा दिया था और वो दो टुकड़ो में बट जाने के बावजूद अब अमर था । उसका सिर अपने आप में स्वतंत्र और जिवित ईकाई था और उसका धड़ भी अपने आप में अलग स्वंतत्र जिवित ईकाई था । जंहा स्वरभानू पहले एक ही शरीर था वंही अब वो दो टुकड़ो में बंटकर भी जिवित था और एक की जगह दो हो गया था । क्योकिं सूर्य और चन्द्र ने स्वरभानू के विषय में भगवान विष्णु को बताया था फलस्वरूप स्वरभानू दो टुकड़ो में बंट गया था । इसलिये यंही से राहु और केतु की सूर्य और चन्द्रमां से शत्रुता हो गई । अब जब भी हम राहु अथवा केतु को सूर्य अथवा चन्द्रमा के साथ देखते हैं तो ग्रहण योग अथवा अपयश योग बनता हैं । जाहिर हैं, शास्त्र सम्मत शत्रुता का जो संकेत हमे मिलता हैं वो इस तरह फल के रूप में प्रकट होता हैं ।

इस तरह जब स्वरभानू दो टुकड़ो में बंट गया और फिर भी जिवित था तो उसके जिवित सिर को उसकी मां सिहिंका अपने साथ ले गई और उसे प्रेमसे पालने पोसने लगी । कालांतर में इसी सिर में से सर्प का धड़ निकल आया । इसी प्रकार स्वरभानू के धड़ को मिनि नामक ऐक ब्राह्मण ले गया और वो उसे पुत्रवत पालता रहा । इसे भगवान विष्णु ने पूर्वजन्मो के कर्मो के कारण सर्प का सिर दे दिया । अब यंहा राहु को सर्प का धड़ और केतु को सर्प का सिर देने की बात कहकर शास्त्रों ने राहु - केतु से सर्प का संबंध होने की बात कर दी हैं ।

स्वरभानू के ऐक शरीर के दो टुकड़े हो चुके थे और राहु केतु के रूप में उसका दूसरा जन्म माना गया । कहा जाता हैं कि राहु जब भी चन्द्र के साथ होता हैं तो ग्रहण योग बनाता हैं और वंही केतु सूर्य के साथ होने पर ग्रहण योग बनाता हैं । यंहा स्वरभानू और सूर्य , चन्द्र की शत्रुता अपना कार्य कर रही हैं । भगवान विष्णु के दिये सिर के कारण केतु मोक्षकारक बन गया । हालाकि इसमें उसके पूर्व जन्मों के कर्म विशेष भूमिका निभाते हैं जिससे प्रसन्न होकर भगवान ने उसे मोक्षकारक बनाया हैं ।

मत्स्य पुराण में बहुत से केतुओं का उल्लेख हैं परन्तु उन सबमें धूमकेतु प्रमुख हैं और कहा जाता हैं कि केतु की ध्वजा सूर्य से भी बड़ी होती हैं । यंहा शायद शास्त्र ये संकेत करते हैं कि केतु की भूमिका सूर्य से भी महत्वपूर्ण हैं । अगर हम कुण्डली की बात करें तो हम देखते हैं कि कुण्डली में सूर्य आत्मा का कारक हैं और केतु मोक्ष का कारक हैं । आत्मा से अधिक मोक्ष महत्वपूर्ण हैं ।

कई बार हम कुण्डली में देखते हैं और हमने सीखा भी हैं कि कोई भाव यां फिर कोई ग्रह पाप मध्यत्व में हैं अथवा पाप कर्तरी योग में हैं । अर्थात ग्रह अथवा भाव के आगे पीछे पाप ग्रह हो तो पाप मध्यत्व अथवा पाप कर्तरी योग बन जाता हैं । ऐसे अशुभ योगों में ग्रह अथवा भाव निर्बल हो जाते हैं । जब दो पाप ग्रह आपस में मिलकर किसी भाव यां ग्रह को निर्बल बना सकते हैं तो राहु और केतु तो विशेष

प्रभाव देने वाले पापग्रह हैं । उनके मध्य में आने वाले ग्रह तो अवश्य ही विशेष पाप प्रभाव में आयेगें । इसी विशेष पाप प्रभाव को 'काल सर्प योग' नाम से रेखांकित किया गया हैं ।

इसका वैज्ञानिक विश्लेषण करें तो, हम पायेगें कि पृथ्वी जिस कक्षा पर घूमती हैं । उस कक्षा को चन्द्र अपने संचार से काटता हुआ आगे बढ़ता हैं और जंहा चन्द्र, पृथ्वी की कक्षा को काटकर आगे बढ़ता हैं उसी अतिक्रमण को अथवा उस स्थान को राहु के नाम से पुकारा जाता हैं । इसके ठीक १८० अशों पर फिर ऐक बार चन्द्र, पृथ्वी की कक्षा को काटता हैं उसे केतु के नाम से पुकारा जाता हैं ।

अब आप सोचकर देखें कि दो अलग अलग प्रभाव के ग्रह अगर ऐक जगह पर अपना प्रभाव छोड़ेगें तो जाहिर हैं कि वंहा ऐक तीसरा प्रभाव उत्पन्न होगा । इस तीसरे प्रभाव के बीच में अगर सब ग्रह आ जायें तो जाहिर हैं इससे प्रभावित तो होगें ही और यही आगे और पीछे से पड़ने वाला प्रभाव ऐक ब्रेकेट बनाता हैं, जिसे हम काल सर्प योग के नाम से जानते हैं ।

काल सर्प योग का मतलब ही अगर हम देखे तो पायेगें कि लबें समय तक बनने वाला विष अथार्त दुख का योग । काल अर्थात समय, सर्प अर्थात विष अथवा दुख कह लिजिये । आखिर विष, दुख-कष्ट पहुचाने का पर्याय ही हैं । सर्प से लबांई का अहसास अपने आप ही होता हैं । इस तरह लंबे समय तक होने वाले कष्ट अथवा दुख को हम 'काल सर्प योग' कह सकते हैं । जोकि राहु-केतु के सभी ग्रहों को घेर लेने से बनता हैं । शास्त्रों की ये विशेषता हैं कि वे कई बातें इस तरह दर्शाते हैं कि उनके कई मतलब और मायने होते हैं और सबसे बड़ी बात ये, कि वो समय के साथ पुराने नही पड़ते हैं ।

वाराह मिहिर ने वाराह संहिता में और पाराशर ने होरा शास्त्र में सर्प योगों का उल्लेख किया हैं । परन्तु हम जानते हैं कि वो 'काल सर्प योग' का उल्लेख नही हैं । 'काल सर्प योग' को किसने खोज निकाला हैं अथवा कब खोजा हैं ? ये कोई नही जानता हैं अथवा इसका कोई पक्का सबूत नही हैं । इसिलिये इसके ना मानने वाले अपनी बात जोर शोर से कहते हैं । क्योकि हम अपनी बात शास्त्र को प्रमाणित करके कहते आये हैं और काल सर्प योग के लिये हमारे पास कोई शास्त्रीय प्रमाण नही हैं । इसलिये इसके मानने वाले अक्सर चुप्पी साध लेते हैं ।

बहरहाल 'काल सर्प योग' के फल प्रत्यक्ष देखने को मिलते हैं और इसपर गहराई से विश्लेषण अथवा अनुंसधान होना आवश्यक हैं । अमेरिका के राष्ट्रपती अब्राहम लिंकन की कुण्डली में 'काल सर्प योग' था । कमाल ये हैं कि उन्हौने इतिहास रच डाला हैं । १८६० में बहुत ही कम मतों से जीतकर अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपती बने थे । इसके कुछ ही समय बाद वंहा ग्रहयुध्द छिड़ गया, उन्हे इससे बहुत जुझना पड़ा और साथ साथ अपने परिवार में वे असंतोष को भी झेलते रहे थे । फिर भी वो अमेरिका के महानतम राष्ट्रपतियों में गिने जाते हैं । एसा कहा जाता हैं, कि उन्हे अंर्तज्ञान होता था और भविष्य में होने वाली घटनाओं को वे जान लेते थे । इसी के चलते उन्हे अपनी मृत्यु का भी अंर्तज्ञान हुआ था । इस अंर्तज्ञान की घटनाओं को वे स्वप्न में देखा करते थे । 'काल सर्प योग' का ये कैसा विशेष प्रभाव हैं कि व्यक्ति विलक्षण हो जाता हैं ।

पंडित जवाहरलाल नेहरु की कुण्डली में 'काल सर्प योग' था । कौन नही जानता कि नेहरु ने इतिहास रचाया हुआ हैं । विभाजन की आग में जलते भारत को शांत करना और भविष्य की रुपरेखा बनाना, जिससे फिर कभी भारत गुलामी की जंजीरों में ना जकड़ा जाये । ये वो जिम्मेदारियों थी जो जवाहरलाल नेहरु को निभानी थी । विभाजन की वजह से भड़के जातिवादी दंगों में नेहरु स्वंय जाते थे और दगांइयो को समझाते थे । इसके लिये उन्हे अपनी जान की पर्वाह नही होती थी । हालाकि इसमें समय तो बहुत लगा परन्तु नेहरु ने कर दिखाया और वे दगांईयो को समझाने में कामयाब रहे । इस तरह भारत विभाजन की आग को सह गया । भविष्य की रुपरेखा के लिये सारी दुनिया की निगाहें भारत पर थी, कि कैसे नेहरु भारत के लिये आने वाले समय की रुपरेखा बनाते हैं । नेहरु विदेशों में रह चुके थे और पुंजीवाद के बढ़ते प्रभाव को खूब जानते थें । इसलिये उन्हौने पुंजीवाद की ओर अपना रुझान दिखाया परन्तु अंदर ही अंदर उन्हौने गांवों में भारत को बसाने को अथवा गांवों की खुशहाली को प्राथमिकता दी । इससे दुनिया भुलावे में रही कि नेहरु पुर्जीवाद को भारत में पनपने देगें परन्तु नेहरु ने भारत में जनतंत्र को पनपने दिया । इससे नेहरु भारत की बुनियाद तो मजबूत करते रहे साथ साथ पुर्जीवाद के नाम पर दुनिया से सहयोग लेने में भी सफल रहे । इसिलिये कहा जाता हैं कि असली भारत गांवों में बसता हैं । क्या ये स्वनिर्माण की योग्यता, ये कड़ा आत्मबल और जुझारु प्रवृति 'काल सर्प योग' की देन हैं ?

और तो और आजाद भारत की कुण्डली में १५ अगस्त १९४७ को 'काल सर्प योग' बना हुआ हैं । आजादी के बाद भारत अपनी उन्नति की ओर निंरतर अग्रसर रहा हैं । भले ही चीन, पाकिस्तान और आंतकवाद से लड़ाई के दौरान उसके इरादों की परिक्षा ली गई हैं । लेकिन अपनी निंरतर मस्त हाथी वाली चाल से भारत अपने स्वनिर्माण से कभी पीछे नही हटा हैं । ये जुझारु प्रवृति और कड़े आत्मबल की नीशानी हैं । क्या ये 'काल सर्पयोग' के फल हैं ?

अगर एसा नही हैं तो सभी लोगों में जिनकी कुण्डली में 'काल सर्प योग' बना हुआ हैं, उनमें ये समानताऐं क्यों हैं ? वे जुझारु, कड़े आत्मबल से युक्त और स्वनिर्मित क्यों हैं ? सोनिया गाँधी के जुझारुपन से कौन इन्कार करेगा ? दक्षिण के सुपर स्टार रजनीकाँत के बस कंडक्टर से सुपर स्टार बन जाने को कौन स्वनिर्माण नही कहेगा ? धीरुभाई अंबानी, हर्षद मेहता, अजीत सिंह, ए आर अंतुले, पी चिंदबरम, के करुणा करण, मनोहर जोशी, मुलायम सिंह यादव, डॉ मुरली मनोहर जोशी, नजमा हैपतुल्लाह, नारायण दत तिवारी, राम जेठमलानी, राम विलास पासवान, राजेश पायलेट, शीला दीक्षित और चौधरी चरण सिंह इत्यादि एसे लोग हैं जो 'काल सर्प योग' से युक्त कुण्डली वाले हैं । इनकी योग्यताऐं किससे छुपी हैं ।

एसा नही हैं कि इन सब लोगों में एक जैसा ही 'काल सर्प योग' हैं । राहु- केतु की विभिन्न भावों में स्थिति अनुसार ही अलग अलग 'काल सर्प योग' बनेगें । इस तरह प्रथम भावसे गिनकर बारह भावों में बारह विशेष 'काल सर्प योग' बनते हैं । अंनत, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, पदम, महापदम, तक्षक, कर्कोटक, शंखचूड़, घातक, विषधर और शेषनाग आदि बारह 'काल सर्प योग' विशेष रुप से गिने गये हैं । प्रत्येक योग का अलग अलग फल भी हैं । इनके फल में विभिन्नता तब अधिक प्रकट होती हैं जब कुण्डली में 'काल सर्प योग' के साथ साथ माला, छत्र, नौका और मुसल योग जैसे शुभ योग भी बन जाते हैं ।

इसके अलावा वाराह मिहिर के सर्प दंश योग हैं, पाराशर के सर्प योग हैं और रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग सर्प योनि में जन्म लेते हैं और इनके फल भी कंहि कंहि 'काल सर्प योग' से मिलते जुलते हुए जान पड़ते हैं ।

बहरहाल विद्वान ज्योतिषि इस पर अनुसंधान अवश्य करें और इसका विश्लेषण करके नये ज्योतिषियों के लिये मार्गदर्शन का कार्य करें । ज्योतिष जगत को फिर एक 'वाराह मिहिर' अथवा 'पाराशर' की आवश्यकता हैं । अन्यथा विवाद और उलझनें ज्योतिष के संगी-साथी बन जायेगें और नये ज्योतिषि कर्तव्य विमूड़ जैसी हालत में हो जायेगें ।

समाप्त ।।।।